

[Faint, illegible handwritten text]

[illegible]

१. अथ भूमि कं प ॥ ॥ मीने कुलिले म करे व कुर्मै ॥ तिहे
तलायां मिथुने फनिशामे ष च नु कं ने कयो धरि त्रीं व
षालि कुं भादि गपा वरं ति ॥ क छ ये वर ते म त्पु दुः
त्रि भ व थ पं न यं ग्ग कु स लं सर्व कार्प्य व पि थि यां वः
जि त्पादिय ॥ ॥ १ अथ गो व र फलं ॥ जन्मे र वी रो
ग क रो ति भौ मेः सौ रे व म त्पु दु व सि हि के य ॥ गुरुः

वि वा दं दु ध अर्थ नाशं चं दे व सौ षां च न ला भ शु क्रे त
॥ द्वि ति य रा दु श्व महा वि घा तं सौ रि क्ष यं भूमि ज दु ख
हे त ॥ चं दे प्र मो द दि न ना थ हा नि गुरु दु धै शु क्र मः
हा श उ सौ षां ॥ २ ॥ तृ ति य रा सौ र वि शु क्र भौ मा शानिः
श्व रे रा दु नि शां क र श्व ॥ ला भं जय पु ष्ठि का रो ति सौ
षं गुरु रु ज्ञा हा नि श्व कं रं तृ ति य ॥ ३ ॥ च त्पु र्थ ग व द्द क

सुते च सोम्यं विरोचदोषारवि सौरा रे ॥ स्वसिं न्न सोः
 त्वं भृगुसोम्यं जिवा परोपदोतापं कुरुते च राहु ॥ ४ ॥
 विलोमसिं न्नं दिननाथ सौरिकर न्न रोग वृध तै हिके
 यौ ॥ आशानपिडा हिमगुश्च भौमेः गुरु भृगु पय सोम्य
 दाता ॥ ५ ॥ राहु सि। ताकिं वृध रात्रिनाथौ दिवा कर भु
 मिज वृक्ष गेष्ट ॥ सोम्य च ने रोग विनाश मे यगिर्वाण

न र
 पुज्यो न्नं दाति सोम्यं ॥ ६ ॥ शनिश्च रे रोक्षयतेति
 सूर्यो वृधे रगो वं धनवे धनराहु ॥ स्वल्पं धनो दे गवि
 नाशजा यागीर्वाण पुज्यो भृगु दाति सोम्यं ॥ ७ ॥ चंद्रास्य
 मे मत्स्य करोति जीवे भौमे च दाशं मर नाति सौरि ॥ वी
 घाट राहुश्च तथै वलुजी दे त्येद्र पुज्य वृध रत्न वृद्धि
 ॥ ८ ॥ धर्मस्थि ते दे व गुरु सौम्यं वध वं धन

श्री मे ॥ वै स्वाविरो चं रवि रउ रोगं दु यो वि पन्नं शनि
 राहु दै व्यं ॥ २ ॥ व हस्य तो भागं व ज्ञं मर त्ये शानि श्रु रे
 राहु वि भं ग दो ष ॥ वा शां क स र्यो च करो तिला भं म ग ॥
 अनु व नि जे व पु स्ति ॥ १० ॥ स र्यो करो तिला भं श्री मे व यो
 जि व सि वें ता किं रा हु ॥ सि धि स र्वं च स भ ग भ वं ति ए का
 द श स्था न ल भे ति रे ता ॥ ११ ॥ अ र्त्त गु रू श्री य य भुः
 मि पु त्रे मं दे दु स र्यो वि प दं च रा ॥ दु बु ध श्रु क श्रु व

लं च सौ मं रा त्या दि ते ता श्रु वि वा र का या ॥ ई ति गो र
 र क लं ॥ ॥ अथ व बु ना ति ॥ अ न्धि नि रु त्र नि र्ये व क
 रु का या द म व व कु ज च गु मि नि ग्य य म य ना ति वि धि य
 न ॥ १ ॥ क नि का या रु या या दा च ना हि नि मृ ग नि र्द क न
 था शु क द गु मि नि ग्य य द व ना नि वि धि य न ॥ ११ ॥ मृ
 ग नि ना या अ र्द्ध ना न पु न र्व सु वि या द क ॥ बु ध द गु

सुखी
नमः

मिनिग्रयं मिथुनराशि विधीयते ॥ ३ ॥ शुनर्वसुचया
दकं निष्पसायं समं विनं ॥ चन्द्रकृते मिनिग्रयं कर्कशा
राशि विधीयते ॥ ४ ॥ मघं च पूर्वाषाढं च उत्तराषाढ
मेव च मानुक्षेत्रे मितिज्ञं सिंह राशि विधीयते ॥ ५ ॥ उ
त्रायां च योपादा च रुत वित्रा चैकं तथा ॥ बुधक्षेत्रे मिति
ज्ञं कन्याराशि विधीयते ॥ ६ ॥ चित्राया स्वाति संयुक्तं

श्रीराम

विशाखायां पदत्रयं ॥ शुकक्षेत्रे मितिज्ञं तुलाराशि
विधीयते ॥ ७ ॥ विशाखां पादमेव च मेषज्येष्ठा समं वि
नं ॥ भौमक्षेत्रे मितिज्ञं विष्टाराशि विधीयते ॥ ८ ॥
मूलं च पूर्वाषाढं च उत्तराषाढमेव च ॥ जीवक्षेत्रे
मितीज्ञं धनुराशि विधीयते ॥ ९ ॥ उत्तराया च यो
पादा च श्रवणं धनेष्ठा चैकं तथा ॥ शोदिक्षेत्रे मितिज्ञं

यं मकराक्षि विधीयते ॥ १० ॥ धनेष्टायां अर्द्धताने
 पूर्वमदुत्रीपादकं ॥ शनिक्षेत्रे मिति ज्ञेयं कुम्भरा
 शि विधीयते ॥ ११ ॥ पूर्वमदुचपादेकं उत्तराररेवती
 तथा ॥ जीवक्षेत्रे मिति ज्ञेयं मीनराशी विधीयते ॥ १२ ॥

१	२	३	४	५	६	७		
अ	म	अ	ह	अ	उ	श	आनंद	शुभ
भ	आ	म	वि	ज्य	अ	पू	कालंद	अ
कै	पु	पू	स्वा	नू	श्र	उ	धूमो	अ
रो	ति	उ	वि	पू	ध	रे	पुजापति	शुभ
म	श्र	ह	अ	उ	श	अ	लोम्य	शुभ
आ	म	वि	ज्य	अ	पू	म	धाक्षे	अ
पु	पू	स्वा	नू	श्र	उ	कै	धुज	शुभ
ति	उ	वि	पू	ध	रे	रो	श्रीवल्ल	शुभ
श्र	ह	अ	उ	श	अ	म	वज्र	अ
म	वि	ज्य	अ	पू	म	अ	मृदगल	अ
पू	स्वा	नू	श्र	उ	कै	पु	छत्रे	शुभ

मित्र श्रम
मानस श्रम
पद्म श्रम
लुंवक अ
इत्यात अ
मृत्यु अ
कांत्यते अ
सिद्धि श्रम

ति अ म प उ ह वि स्वा

रो म आ पु ति अ म प

रे अ म क रो म आ पु

ध श प उ रे अ म क

प उ अ अ ध श प उ

वि अ म म प उ अ अ

उ ह वि स्वा वि अ म म

श्रम श्रम
अमृत श्रम
मृशाल अ
गडा अ
मातंग श्रम
राक्षस श्र
वर मधुम
स्थिर मधुम
वर्द्धमान श्रम

वि अ म प उ अ अ ध

उ ह वि स्वा वि अ म प

ति अ म प उ ह वि स्वा वि

त म आ पु ति अ म प उ

रे अ म क रो म आ पु ति

ध श प उ रे अ म क

प उ अ अ ध श प उ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अश्विनीरवीवारेण. शोभे मृगशिरस्तथा. ॥ अर्क्षे
 षांगारवारेण. बुधे हस्तप्रकीर्तिता. ॥ अनुराधागु
 रुवारे. उत्राषाढाच भार्गवे. ॥ वाहतां शनिशयु
 क्तं. आनंदोयप्रकीर्तिता. ॥ इति आनंदयोगः ॥

तव
 तम

१. ॐ नमः श्रीसूर्याय ॥ कार्तिकेयउवाच ॥ आदित्य
 स्य कथं नयं मनुजस्य कथं रुवेण. स गवश्च. ॥ अगुमिच्छ
 मि. कथं वा दत्तामरुयः ॥ ॥ श्रीशुक्रिभ्यः उवाच ॥ ॥ ॥
 वत्सयनं गुह्यं गुह्यं गुह्यं त्वं नुह. कथयामि न सर्वदह
 ॥ पुणस्तदा हि. ॥ ॥ ॥ सर्वमपि कन. ॥ ॥ वत्सर्वाथ
 प्रमिताधका. सर्वजागयममन. सर्वविष्णुविनाशनं ॥

प्रको (म) वदु धा रु लो का टि रु दौ वि नि ऋ न ॥ मा
 समा स तु न य न प्र को दौ द गी गी ग न ॥ मि तु मा
 मी नि न मा स यो व वि स ॥ स ना न न ॥ वे नू (म) मा
 घ मा स तु सूर्यो र्वे हा कु ने म न ॥ वे नू मा स म हा रु
 नू वे मा व न य न ॥ स्म न ॥ सु ष मा स ग यो वि स ॥ श्री षा
 रु न य न न वि ॥ ग रु स्मि ॥ धा व (म) मा स य मा हा ड य

द न य ॥ आ न्दि न च दि न (म) सो कार्त्तिक च दि वा व
 न ॥ वे नू य न दौ द म दि त्या मा स मा स य की र्ति ता ॥
 उ ग नू यो म हा न ग डा यू गी गी न त्व व च्च स ॥ ॥ नू न म
 सह सु गी षा य आ दि त्या य न मा न म ॥ न म ॥ य च
 धु नू पा य य रु म य न मा न म ॥ न म स्म य म हा स्मा य
 व नू म य न मा न म ॥ न मा दि नू य ग र्हा य हा स्त ना
 न

यनमानमशानमस्तु ४ स्व नूयाय सादिरु ननभा
नमशानमस्तु अग्निगर्दीय प्र लषायनमानमशान
मस्तु मित्रनाभय सूर्यायेवनमानमशानमस्तु
सुजिदाय हानवेवनमानमस्तु ॥ वक्रा त्वेव विवस्व
वृद्धस्ववनमानमस्तु ॥ त्वमेवाग्निश्च वायुस्त्वैदवस्व

वनमानमस्तु ॥ सर्वरु ४ सर्वरु नहि किश्चिद्वया
विना ॥ वनावनजगत्सिन्धुद्वेव वस्तिगा ॥
आदिषाहास्तु ४ सूर्यं न्या कौरानर्हि वाक्व ४ सूव
ध्वं वगा ४ सूवन्य यसा कुरु सुगंदग ॥ ४ मुस्तिमि
ननागन्ध द्वादशापविकीर्तिगा ४ नका द्वा न्यवक
निरा ४ सिंदूवा नृध विग्रहा ४ गयनस्तु यन न्येव

कर्त्तुं सर्वं यत्नं न शक्यते। ला कृत्वा दीप्तिं वा क० ॥ १० ॥ आमाधी
॥ ११ ॥ दिवा कन० ॥ अग्निगंधी मेहा विष० ॥ खन० ॥ सफा ॥ ध्ववाह
न० ॥ यद्वाहक महान्का अग्न्यं ॥ १२ ॥ तामद ॥ नग० ॥ मधुर्ल
का नय ॥ विसृष्ट ॥ मूल ॥ तान ॥ १३ ॥ रावय ॥ १४ ॥ स ॥ नुस
दानि ॥ तस्य ॥ वाग ॥ रय ॥ १५ ॥ १६ ॥ कार्त्तिक ॥ यन्न ॥ न
सर्व ॥ पाप ॥ हर्ष ॥ यन् ॥ कथ ॥ यामि ॥ न ॥ स ॥ द ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

प्राग्भन्त्रमप्राग्भन्त्रदान्धन्त्र। प्रकाहिकेदाहि
केचनथाप्रिदिवसकनै॥ बापुधकिनथापुयं
थाचसगनकनै। कृष्णमप्याधुनागं कृष्णिनागं
कयंगथा॥ अस्मन्नीमृषकृष्णनानावाधिरुय
नथा॥ नन्थनिसकलाप्राग्भन्त्रसर्वदहस्यसम्

वान्॥ मर्दमर्दमहाप्राग्भन्त्रमर्दमर्दगुवदना॥ विल
यंयानुननित्यंमादिखावावधनपु। नद्वनद्वस्वमा
दवग्रहप्रागुरुयपुय॥ प्रममयापुनसर्वकीर्ति
नत्यदिवाकनै। ननस्यवाधिराधनंनचात्रिहि
सयंरुधं॥ गृहीत्वासूयवर्किकं सनावलीकृ

१२
(मनसुः) ... आगस्ययठिनमार्ष्टान
आगमस्यमृचनानदागव्यनवकवी (गमपिनवी
प्रयत्नगः॥ कदुतेलसमायूक्तं तस्यदानेप्रदाययए
। पिहाजपः॥ प्रिसंध्या बहामकमदिनदिन॥ जप
मानस्यनस्थितिनागमः॥ कुनग्रहास्तथा॥ किमनोवर्द्ध

रिज्जने॥ लालु वीवद्ववित्तने॥ जप्यन्मनिक
नैवैव सर्वार्थप्रतिसाधकं॥ नास्मिकायनदागव्य
दववाप्रसनिदक। पुनरुक्तायदागव्य (गमपिन
वीप्रयत्नगः॥ प्राकनादिलोकीत्यसु सर्वपापप्रनाश
नं॥ गमपि (वेवद्वन द्व मृचन सर्वपागकः॥

शिवा नाग्यक वे (ये) व धनवृद्धि यमस्कन शयिकाल
 मक कालमाय ४५ (१०) न विसर्ग नि (धो) ॥ सोही सुकल
 माप्राणि नाग्यकाया विबो न धा ॥ ११ सवर्ष पाय विनिर्मक सु
 र्या लाक महीयन ॥ ३५ ॥ इति लिंक महामनुसूया
 वतान सूर्य भानि ४ समाप धा ॥ ३५ ॥ श्री गणेश ॥

ASHA ARCHIVES 3529

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

म	कुं	सि	वे	मि
मी	म	सी	आ	मि
रु	मि	मि	ने	रु
क	सि	व	का	स
क	कु	व	मै	र
वि	वि	स	का	व
ध	ध	म	वे	स
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		ग
		वि		वि
		रु		रु
		म		म
		न		न
		ग		